

ज्ञान विकास (ज्ञान का विकसन)

पुस्तक विवरण ( छापा विवरण )

पुस्तक नाम	:	ज्ञान विकास
लेखक	:	श्री भगवत् 108 / 21, चेंगम रोड, टी.एस.आर.नगर, योगीराम सूरत कुमार आश्रम के पीछे तिरुवण्णामलै – 606 603.
पुस्तक निर्माण	:	प्रवाहम पब्लिकेशनस 31, रामलिंग स्वामी स्ट्रीट अम्मापेट्टै, सेलम – 636 003. 0 99942 – 05880, 0 97891 – 65555
छापा	:	पहला छाप (तमिल) अप्रैल 2009 पहला छाप (हिन्दी) दिसम्बर 2010
प्रकाशन ) पुस्तक वितरण )	:	प्रवाहम पब्लिकेशनस 31, रामलिंग स्वामी स्ट्रीट अम्मापेट्टै, सेलम – 636 003. 0 99942 – 05880, 0 97891 – 65555
दाम	:	रूपये 15 / –

## एडिटोरियल

हम अपने जीवन में कई महानों की किताबें पढ़कर उनमें जो तरीके लिखे गये हैं उनका अनुकरण भी कर रहे हैं । पर खोज की अन्त न हुई है – उसी समय हमारे मन में चिन्ता और प्रश्न आ ही रहे हैं । उनसे बताये गये सत्य आधा समझ में आये या न आये के जैसे हैं । परन्तु मुक्ति पाने की कोशिश हम लगातार कर रहे हैं ।

श्री भगवत जी से मिलने के बाद, उनकी " ज्ञान मुक्ति " और "दुःखों का सुझाव " आदि किताबों को स्पष्ट रूप में समझने के बाद भी हममें यह खोज समाप्त होती है । सभी प्रश्न और चिन्ता अपने आप दूर हो जाते हैं । महानों के ग्रन्थों में जो आन्तरिक सत्य है उसे हम आसानी से समझ सकते हैं । हम जाने या अनजाने अपने आप एक शान्त स्थिति प्राप्त करते हैं ।

आपके हाथ में दीख पढ़ने वाली यह ज्ञान विकास किताब 28-9-2008 सेलम में मनायी गई " चिन्ताओं का सुझाव ' ग्रंथ प्रकाशन उत्सव में भगवत्जी का जो भाषण था उसका लिखित रूप है । अगर आप इस ग्रंथ को पढ़ते समय मन खोलकर किसी पूर्वराय के बिना हर एक पंक्ति को पूर्ण रूप में पढ़ेंगे तो आपकी मुक्ति की रुचि सचमुच हो जाएगी । इस ग्रंथ में जो बातें हैं उसे कई दृष्टान्तों के साथ विस्तार रूप में लिखे गए ग्रंथ ही "ज्ञान मुक्ति ' तथा " चिन्ताओं का सुझाव ' आदि ग्रंथ है । इसीलिए इस किताब को पढ़ने के बाद आपको शंका होने पर उसका समाधान ये दोनों ग्रन्थ करेंगे । हमें जो स्वतंत्रता या मुक्ति का भाव उत्पन्न हुआ है वह सारे संसारवालों को उत्पन्न होना है । ऐसी एक सामूहिक विकास के विचार से हम इस कार्य में शामिल हुए हैं । यह ज्ञान सारे संसार भर में पहुँचना है यही हमारे जीवन का लक्ष्य है इस विचार से हम कार्यान्वित होने तैयार हैं ।

जी के ग्रंथों में :-

1. Don't Delay Enlightenment - अंग्रेजी
2. ज्ञान मुक्ति

3. चिन्ताओं का समाधान

4. ज्ञान मलर्वु – आडियो सी.डी.

ये सब मुफ्त में पाने के शलिए हमारे वेब साईट में आइए ।

वेबसाईट का पता : **[www.nithyapravaaham.org](http://www.nithyapravaaham.org)**.

जी के " ज्ञान मलर्वु " ग्रंथ आडियो सी डी में भी है । चाहिए तो हमसे संपर्क करके प्राप्त कर सकते हैं ।

वी.ए.पी. सरवणन, 99942 05880

एस. जीवमणि, 97891 65555

एन. कैलासम, 94432 90559

प्रवाहम पब्लिकेशनस

31, रामलिंग स्वामी स्ट्रीट

अम्मापेट्टै, सेलम – 636 003.

## लेखक परिचय

श्री भगवत् अपने 18 वीं आयु यानी कालेज में पढ़ते समय से ही आध्यात्मिक रूचि रखते थे । आध्यात्मिक ग्रंथों की खोज करके पढ़ते थे ।

उनकी तीव्र खोज के फल स्वरूप अचानक एक दिन सत्य का दर्शन किए थे । स्पष्टता का उदय हुआ । खोज का अन्त हुआ ।

अपने 58 वीं आयु में ज्ञान प्राप्त किया । कई वर्षों के प्रयत्न के फल से जो ज्ञान प्राप्त हुआ उससे खुश होकर उन्होंने आनन्द का नाच न किया । आश्चर्य चकित हो गए । आधे क्षण में समझ पानेवाले इस ज्ञान के लिए चालीस वर्ष अथक परिश्रम किया – ऐसे वे आश्चर्य में पड़ गए कि उन्होंने जान लिया कि ज्ञान प्राप्ति के लिए अथक परिश्रम की आवश्यकता नहीं है । आध्यात्मिक रूचि रखनेवाले इसे सुलभ से प्राप्त कर सकते हैं इस कारण से – इस ज्ञान को प्राप्त करने की रीति या रास्ता—सब लोग सुलभ रूप में जानने के लिए वर्णन करते हैं ।

सब को आसानी से पहुँचने की रीति में सरल, मीठे, सरस व स्पष्ट होने के कारण जो उनके यहाँ आते हैं उनकी शंकाओं का समाधान साफ—साफ बताते हैं । अपने आप जो सुख—ज्ञान की प्राप्ति की उसे इस दुनियावालों को भी प्राप्त होना है – इसी भाव के आधार पर मार्गदर्शन करते हैं ।

अरंगनाथन, एम,ए., एम.एड

तमिल अध्यापक (रिटायर्ड)

श्री साई निवास

तिरुच्चेन्दूर

लेखक के ग्रंथ

हिन्दी

1. ज्ञान विकास
2. ज्ञान मुक्ति

**ENGLISH**

1. Don't Delay Enlightenment
2. Give up Meditation; Get Enlightenment
3. Renounce God; Be God
4. Absolute Reality

ग्रंथों के लिए

तिण्डुककल	:	वाळग वळमुडन, पुत्तग मैयम – 0451–2423311
चेन्नै	:	श्री विद्या बुक सेन्टर, मयिलाप्पूर 044–24611345, 24511141 मुरळी पब्लिकेशन्स, 9444050089, 044–24350089
तिरुच्ची	:	जेन संगग नूळगम, 0431 – 2701239 इन्टरनेशनल बुक्स, 0431–2703743, 2711599
कोयम्बत्तूर	:	विजया पतिप्पगम, 0422–2394614, 2382614
मदुरै	:	डा. आर. सरवणकुमार, 94434 71456 सर्वोदय इलक्किय पण्णै, 0452–2341746
सेलम	:	श्री. एन. कैलासम, 94432 90559 श्री. वी.ए.पी.सरवणन, 99942 05880 श्री. एस.जीवमणि, 97891 65555
तिरुनेलवेली	:	अरुल नन्दि शिवम, 0462–2339692
तिरुवण्णामलै	:	श्री. शेशाद्रि स्वामिकळ आश्रमम

## ज्ञान मुक्ति ग्रंथ पढ़े कुछ सज्जनों का अभिप्रायः

‘आध्यात्मिकता की खोज में था । आध्यात्मिक विषयों में विरक्त और अतृप्त होने की स्थिति में ज्ञान की प्राप्ति इतना सरल और किसकी खोज करना है आदि इस ग्रंथ से मालुम हुआ । इस ग्रंथ को दुनिया भर में फैलाना है । तत्व को क्षितिल किए बिना सरल रूप में होना ही इस ग्रंथ की विशेषता है । एक सरल व सहज मनुष्य ही इतना सरलरूप में कह सकता है ।

— श्री मुहम्मद अब्दुल कादर, अडिशनल चीफ़ इन्जनियर, नेईवेली.

ज्ञान (Enlightenment) इतना ही है ? इसी के लिए इतने वर्ष संघर्ष । बाकी ज्ञानियों के कहने से श्रेष्ठ रूप में इस ग्रंथ की क्या विशेषता है ? इस ग्रंथ की विशेषता यही है, " ऐसे किसी ने न कहा है " । इस ग्रंथ को पढ़ने से मन का आन्तरिक संघर्ष घटकर, भय निभर्य हो गया है । जो भी पढ़ते उसे स्पष्ट और नये रूप में समझ सकते हैं । सब कुछ पा लिया है; पाने के लिए और कुछ नहीं है — यही भाव प्राप्त हुआ है ।

— श्री आर सरवणकुमार, होमियोपति डाक्टर, मदुरै.

वेदाद्री महर्षि से दीक्षा पाते ही जो खुश हुआ, इस ग्रंथ को पढ़ने के दिन पुनः प्राप्त हुआ । इस ग्रंथ को संसार भर में फैलाना चाहता हूँ ।

— श्री वेद सुब्बैय्या, मनवळक्कलै प्रोफेसर, कोवै.

‘मैं ने जिन विचारों को लिखने के लिए सोचा ये सब इस किताब में हैं । इस किताब का नाम मैंने रखा है **Essence of All Yogas**. इस ग्रंथ को जिसने समझ लिया है उसको ज्ञानी कह सकते हैं ।

— श्री राधाकृष्णन, मनवळक्कलै प्रोफेसर, नागरकोविल

‘किताब बहुत अच्छा है । हर एक वाक्य तत्व है । हर एक शब्द को गौर से पढ़ना है ’ ।

— श्री अरिवानन्दम, बच्चों के विशेष वैद्य, तारापुरम

‘मेरे पास लगभग 3000 आध्यात्मिक किताबें हैं । सबको पढ़ लिया है । पर उनमें मुझे पूरा का पूरा परिवर्तित किया ग्रंथ ‘ज्ञान मुक्ति’ है । इसमें जो स्पष्टता और सरलता है वह और किसी में नहीं है । 15 बार मैंने इसे पढ़ लिया है । फिर से पढ़ने की इच्छा है ।

— श्री शरणकुमार जेन संग आन्तरिक पुस्तकालय, तिरुच्चि

‘ज्ञान मुक्ति ग्रंथ पढ़ते ही मैं बिलकुल बदल गया । अर्थात् छोटे बच्चे जैसे उछलते कूदते हैं उसी प्रकार मैं भी खुशी में कूदने लगा ।

— श्री पार्थसारथी, इन्जनीयर, विरुदुनगर ( 55 आयु )

‘ज्ञान मुक्ति ग्रंथ पढ़ते – पढ़ते ही मुझे व्याधिस्थ बनानेवाले विषय कम होते जा रहे हैं ।

— श्री कैलासम, होमियोपति कालेज छात्र,

पूर्व बैंक अधिकारी, सेलम, (आयु 50)

इस ग्रंथ में बताये रास्ते पर चलने से ध्यान करने की आवश्यकता नहीं होती है ।

— श्री षण्मुखम् (Trainer) आर.वी.एस. इंजनीयरिंग कालेज, तिण्डुक्कल.

(श्री भगवत् जी से बातें करते समय ‘ध्यान की आवश्यकता है या नहीं ? – ऐसे पूछते समय उन्होंने बताया, ‘ये सब टानिक के जैसे हैं व्याधि को दूर नहीं कर देता, ज्ञान की स्पष्टता व्याधि को दूर करनेवाला औषध है । ध्यान में खुशी और मन भरपूर होने पर जिनकी रुचि है वे अनुसरण कर सकते हैं )

धार्मिक तत्व ‘जानने के लिए दुर्लभ हैं, विस्मय कर देनेवाले हैं, बड़े परिश्रम के हैं – ऐसे ही कई लोग सोचते हैं, पर ये समझने सरल हैं, संतोष देने वाले हैं, थकावट न देनेवाले हैं । ऐसे आश्चर्यजनक रीति में विस्तार रूप में बताकर ‘ज्ञान मुक्ति’ नामक नये ग्रंथ द्वारा ज्योति के मार्ग पर ज्योति दर्शाते हैं ।

वैज्ञानिक उन्नति की प्रचुरता के इस युग में आध्यात्मिक विज्ञान बहुत आसानी से समझनेवाला है — ऐसे ये जो सत्य बताते हैं वह हर्षजनक है । बहुत कम ही शब्दों में बहुत बड़े विषय को हमें स्पष्ट रूप में साफ़-साफ़ बताए हैं ।

— श्री तेनमोळी कल्लै अरुटसेलवन, ओड्डनसत्तिरम्

सेलम डिस्ट्रिक्ट इळम्पिल्लै के मनवळक्कलै असिस्टेन्ट फ़ोपेसर ज्ञानप्रकाशम जी 500 प्रतियाँ खरीदकर मुफ़्त में सबको दिए हैं । उनके नाम के अनुसार ही 'ज्ञान मुक्ति' ग्रंथ उनमें जो ज्ञान है उसे और भी प्रकाशित कर दिया है ।

अगर ज्ञान मुक्ति ग्रंथ एक आदमी पढ़कर उसके बारे में जान लेता है तो कमसे कम 10 प्रतियाँ खरीदकर अन्य लोगों को दिये बिना नहीं रह सकता है । सुगन्ध भरा एक फूल विकसित होता है तो सुगंध तो फैलेगा । मैंने जिस ज्ञान की प्राप्ति की उस ज्ञान की प्राप्ति सारे संसार को मिलना है, सारी बसुन्धरा को मिलना है — यह बात तो असली ही है ।

मेरे ख्याल में यह ग्रंथ सारे संसार पर शासन करनेवाला है । मेरे ख्याल में जो बुद्धिशाली दोस्त हैं उनकी प्रशंसाएँ व इस ग्रंथ को फैलाने की जो उत्सुकता है वह बहुत आनन्ददायक है । कई आध्यात्मिक ग्रंथों को पढ़े लिखे बहुत कम ही लोग बुढ़ापे में ज्ञान की ओर अग्रसर होते हैं । पर युवावस्था में ही 'ज्ञान मुक्ति' ग्रंथ पढ़ना / पढ़ाना बहुत अच्छा होगा ।

श्री भगवत् जी ने चालीस वर्ष के परिश्रम से एक कुआँ खोद लिया है । हमें भी कुआँ खुदे बिना उसी कुएँ से पानी लेकर उसका उपयोग करना चाहिए ।

कई लाभदायक खोजों के बराबरवाली खबर इस ग्रंथ में है । जो लोग यह ग्रंथ पढ़ते हैं उनकी जिम्मेदारी है कि इसे युवाओं तक पहुँचाना है ।

पढ़े लिखे सब पढ़कर, सुधारकर अन्य लोगों को भी उन्नति पाने का रास्ता दिखाना है । सब उन्नति पाकर जियें ।

— तिण्डुक्कल, जयगोपाल



सेलम के होमियोपति डा. विजयलिंगम जी को इस ग्रंथ को पढ़ने देने पर देखते ही सोचा कि ये भी ओशो के जैसे लिखे गये होंगे । बताया कि आजकल के ध्यान संस्थाएँ चलानेवाले जो कहते हैं उसे ही ये भी बताए गए होंगे । पर पढ़ाई पूर्ण होने के बाद मैं इसी लिए बहुत खुश हुआ कि जिस सत्य को अन्य आध्यात्मिक संस्थाएँ, लोगों को समझाने का अथक परिश्रम कर रहे हैं उसे ये बहुत सरल रूप से समझाते हैं । कई ध्यान संस्थाएँ करनेवाले कार्य यही ग्रंथ ही करेगा ।

—श्री जे. कार्तिकेयन, विन विन इन्टरनेशनल, चेन्नै

## ज्ञान विकास

सब सोचते हैं कि ज्ञान प्राप्त करना ही आध्यात्मिक क्षेत्र में प्राप्त होने की ऊँची स्थिति है । यह आध्यात्मिक लोगों का विचार है ।

पर साधारण मनुष्य तो सोचते हैं कि सब दुःखों से मुक्ति पाना काफ़ी है ।

चिन्ता ही हमें बहुत सताता है । दुःख के बिना रहने पर अच्छा होगा । समस्याओं के बिना रहने पर अच्छा होगा – यही सब लोग साधारण रूप में सोचते हैं । पर सच तो यह है कि ज्ञान प्राप्त करने की स्थिति में ही चिन्ताएँ दूर होती हैं । चिन्ता दूर होने की स्थिति में ज्ञान का अस्थित्व होता है । दोनों एक ही है । दुःख से दूर होना एक है और ज्ञान प्राप्त करना एक है । दोनों अभिन्न स्थिति में एक होते हैं ।

अपने उपमा न होनेवाले के चरण में आये बिना

मन की चिन्ता बदलना दुर्लभ है ।                    ---    तिरुक्कुरळ

अपने उपमा न होनेवाले के चरण में आना ही मुक्ति की स्थिति है । उस अन्तिम स्थिति को ही अपने बराबर न होने वाले के चरणों में आना कहते हैं ।

ज्ञान स्थिति प्राप्त करनेवाले को ही चिन्ता नहीं होती है – इस बात को तिरुवल्लुवर ने 2000 वर्षों के पहले ही जान लिया है ।

मेरे बचपन में मैं जे.कृष्णमूर्ति के ग्रंथ उत्सुकता से पढ़ा करता था । वे भी इसे ही कहते हैं । वे बताते हैं कि समस्याओं और चिन्ताओं से मुक्ति पाना है तो पहले उसे पहचान लेना है । यह भी बताते हैं कि उनको एक बार ठीक तरह से समझ लेंगे तो निरन्तर उन समस्याओं से छूट सकते हैं ।

हम भी चिन्ताओं और समस्याओं को समझ ही लेते हैं । पर न मालुम है कि क्या निरन्तर उनसे छुटकारा पा लिया है ? चिन्ता या डर हमें आ

जाता है । उनके कहेनुसार सोच विचार करने पर उस समय ऐसा दीख पड़ता है कि थोड़ा सा समझ लिया है और उन समस्याओं से छुटकारा पा लिये हैं । पर और एक परिस्थिति में चिन्ता व भय फिर आ जाते हैं ।

इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि कहीं हम ने उन समस्याओं को ठीक तरह से न समझ लिया है ।

किसी गहरी बात कह रहे हैं । बाहरी रूप से ही हम किसी को समझते हैं । गहरे रूप में हमने नहीं समझ लिया है – ऐसे मैंने सोचा ।

दोस्त के घर जाकर एक प्याला पानी माँगते हैं । अगर ये पानी देते हैं तो ठीक होगा । उसके बदले वे ऐसे कहते हैं कि आप एक कुआँ खोद लेंगे तो लगातार पानी लेकर पी सकते हैं । जे.के. ने जो बताया वह ऐसा ही है – मुझे ऐसे सूझ पड़ा ।

साधारण समस्या का समाधान पूछने पर, अगर आप ज्ञान प्राप्त करेंगे तो इस समस्या का समाधान हो जाएगा – ऐसे उनसे कहने पर भी ऐसा ही दीख पड़ता है ।

एक प्याला पानी के लिए कुआँ खोदने को कहा – मुझे ऐसा प्रतीत हुआ ।

चिन्ता और भय से छुटकारा पाने के लिए ज्ञान प्राप्त करना—ऐसे बताते हैं । ज्ञान प्राप्त करना क्या साधारण विषय है ?

यह तो बहुत असाध्य विषय है ? छोटी समस्याओं के लिए भी ऐसे ज्ञान प्राप्ति ही जवाब होता है ।

तीस वर्षों से दोनों को मिलाकर न देख पाने का हलछल में था । फिर ही समझ में आया, समस्याओं से छुटकारा पाना जितना सुलभ हो वैसे ही ज्ञान प्राप्ति भी उतना सुलभ है ।

हमें मानसिक रूप में कई समस्याएँ होती हैं । उन सबको मिलाकर एक नाम दिये हैं – चिन्ता ।

एक पेड़ की कई शाखाएँ होती हैं । पर इतनी शाखाओं का धारण करनेवाले पेड़ का मूल भाग एक ही है । उनको काट देने पर सारी शाखाएँ पेड़ के साथ गिर पड़ेंगी ।

हमारी आन्तरिक समस्याएँ भी ऐसी ही हैं । हमारी सब मानसिक समस्याओं की एक ही आधारशिला होती है । उस आधारशिला को समझकर उसे दूर करें तो सब समस्याएँ दूर होती हैं ।

स्वेटर बुनना आपने देखा होगा । हमारे शरीर में ठीक तरह से फिट होने के लिए नापकर ऊन की धागा से बुनते हैं । कई दिन सावधानी से बैठकर बुनते हैं । वह स्वेटर सुन्दर कलर में होता है, हाथ होता है जेब होते हैं, तरह तरह के फूल के कारीगरी भी होते हैं । पर उस स्वेटर के एक सूत को लेकर खींचते हैं तो पूरा स्वेटर खराब होकर खाली धागा हो जाएगा ।

उसी प्रकार हमारी समस्याओं के केन्द्रित भाग को समझकर दूर करें तो हमारी सारी समस्याएँ एकसाथ होकर पूरा का पूरा मिट जाती हैं ।

हर एक समस्या को अलग-अलग हल का पता लगाना – ऐसी बात नहीं है । सब समस्याएँ पूरा का पूरा हल हो जाएँगी ।

ज्ञान प्राप्ति की बात भी इसमें सम्मिलित हैं । मन की समस्याओं का हल पाना भी एक ही है, ज्ञान प्राप्ति भी एक ही है । ऐसे मान लीजिए कि हमारे मन में एक चिन्ता पैदा होती है । एक उदाहरण भी लेंगे ।

हमारी अपनी एक कीमती चीज़ नष्ट होकर नाश होती है । उस चीज़ का नाश हमारे मन में व्याकुलता पैदा करता है ।

अगर हम आग में हाथ लगाते हैं तो हाथ दग्ध कर देता है । पीड़ा होती है । पर चीज़ के नाश होना हमारे मन में क्यों पीड़ा पैदा कर देता है ?

चीज़ को हम अपने मन के अंश बना देते हैं, 'मेरी चीज़ है' – ऐसी एक योग्यता उसे दे देते हैं ।

चीज़ हम से दूर होती है । नाश हो जाती है । वह क्यों मन में वेदना पैदा कर देती है ?

उसका नाश होना हमें अच्छा न लगता है । हम चाहते हैं कि उसका

नाश न हुआ होना । पर यह तो सच है कि वह चीज नाश हो गयी है । वह चीज 'मेरी चीज है' — ऐसे मनोवैज्ञानिक रीति से हम उसे लेते हैं । मेरी मनोवैज्ञानिक चाह तो यही है कि उस चीज का नाश न हुआ होना ।

हमारा मन ही हमें दिखाता है कि वह चीज नाश हो गयी है । मन और भी बताता है कि उसका नाश न हुआ होना है ।

नाश हुई चीज और हमारी इच्छा है कि उसका नाश न हुआ होना । ये दोनों तो एक दूसरे के विपरीत है ।

जो कुछ होता है, हमारी सारी प्रतीक्षाएँ उसके विपरीत होती है और दोनों के बीच एक ठकराव सा होता है । यही ठकराव हमारे मन में ही होता है ।

मन का एक भाग कहता है — यह मेरी चीज है, इसका नाश न हुआ होना है —

मन का दूसरा भाग कहता है — चीज मुझसे दूर हो गयी है, वह चीज नाश हो गई है । ये दोनों भाग हमारे मन में ही चलते हैं — कार्यान्वित होते हैं । ये दोनों भाग एक दूसरे से भिन्न होने से हम में भी एक विपरीत भाव — मन का मुटाव होता है । इसे मन की वेदना या मन का क्लेश बताते हैं ।

ठीक है, मनोवेदना हुई है । बाद में हम क्या करते हैं ? क्या मनोवेदना को हम स्वीकार करते हैं ?

मनोवेदना हमें दुःख देती है । इसलिए मनोवेदना को भी नहीं चाहते हैं ।

पहले जो घटना घटी — हमारी चीज का नाश रूपी घटना हमें अच्छा नहीं लगता । इसलिए हमें मनोवेदना होती है ।

अब तो हमें यह मनोवेदना भी अच्छा नहीं लगता है ।

ऐसी ही हमारी यह घटना कितनी भी बार होने पर भी हम तो उतनी बार मनमुटाव रखते हैं ।

इससे हम क्या खोजते हैं ? यह जान लेते हैं कि मनमुटाव होना ही समस्याओं का कारण है ।

मनमुटाव न होने पर समस्याएँ न होती है – ऐसे हमें प्रतीत होता है । हम सोचते हैं कि मनमुटाव के बिना कार्यान्वित होते हैं तो अच्छा होगा ।

इसका क्या अर्थ है ?

हम मनमुटाव के विपरीत कार्यान्वित होते हैं और बिना मनमुटाव के रहना ही ठीक है ।

ऐसे अनजाने ही हम अपने कार्य के हर एक कदम में मनमुटाव ला देते हैं ।

अन्त में मनमुटाव के विपरीत भी कार्यान्वित होते हैं । क्यों ऐसे मनमुटाव रखते हैं ?

हम तो मूर्ख नहीं हैं । हम जो कुछ करते हैं उसका-बुद्धि के आधार पर एक कारण होगा ।

इसका भी एक कारण होगा कि हम ऐसे मनमुटाव रखते हैं । मनमुटाव करना ही ठीक है – यह न्याय है – ऐसे दीख पड़ने के कारण ही हम ऐसे मनमुटाव करते हैं ।

हम क्यों ऐसे मनमुटाव रखते हैं ? हम किसी चीज़ को चाहते हैं ।

हम चाहते हैं कि हमें जो घटनाएँ जैसे जैसे घटती हैं वे ऐसे ऐसे न घटना है ।

हमारी इच्छाएँ ही अपने मनमुटाव के कारण बनती हैं । हम जो चाहते हैं – वह घटता है तो हमें आनन्द होता है । हम जो चाहते हैं वह नहीं घटता है तो दुख होता है ।

हम सुख ही चाहते हैं । ऐसे सुख की प्रतीक्षा करनेवाला एक भाव हममें है ।

सुख की प्रतीक्षा करनेवाले कार्य ही-यह चाहिए या नहीं चाहिए के भाव का कारण बनता है ।

जब तक हमारा कार्य सुख की प्रतीक्षा में होते हैं तो यह सम्भव नहीं है कि मनमुटाव न होने देना है ।

अब तो दूसरी सवाल उठती है ।

सुख की ओर अग्रसर हुए बिना और किस तरह हम कार्यान्वित होते हैं ? — यह प्रश्न उठता है ।

हम किस रीति से कार्यान्वित होते हैं उसी रीति से हम कार्यान्वित होते आ रहे हैं । हमारी हर एक कदम में हम ऐसे कार्य करते हैं ।

अगर हम ऐसे निर्णय कर लेते हैं तो सुख में रूचि रखे बिना कार्य करना ही ठीक है, वह भी एक प्रकार का सुख पाने की रूचि है ।

सुख में रूचि न रखनेवाली स्थिति ही अच्छा है । इसलिए यह मुझे चाहिए ऐसे, हमारी सुख की रूचि को और एक पहलु में बदल देते हैं ।

हम चिन्ताओं से छुटकारा पाना चाहते हैं । बिना चिन्ता की स्थिति चाहते हैं यह भी एक चाह है ।

हम इस खोज को इस शीर्षक में ही लिए हैं कि चिन्ताओं से छुटकारा पाना है । पर हमारी पद्धति या प्रयास मनमुटाव ही पैदा करता है । यह तो हमारी चिन्ताओं को कायम करने के जैसे बन जाते हैं ।

सुख प्राप्ति की रूचि ही चिन्ताओं के कारण बन जाती है । पर हमारी चिन्ताओं से छुटकारा पाने सोचना सुख प्राप्ति की और एक पहलू है ।

आगे हम क्या करें ?

हम जो करते हैं वह हमारे विपरीत ही बन जाते हैं ।

जिस पद्धति से हमें समस्याएँ होती हैं उसी पद्धति को हम फिर से लेने वाले बन जाते हैं ।

यही हलचल हमें होती है कि किस तरह इसका सुझाव देख लें । यही हमारे जीवन की समस्याओं का केन्द्र बिंदु बनता है ।

ज्ञानी अपने जीवन में इस केन्द्रित बिंदु से ही सुझाव पा लिये हैं । ऐसे वे कैसे पहुँच लिए हैं ?

कई ज्ञानियों के जीवन में इस केन्द्र बिन्दु के आधार पर एक ही जैसे सुझाव ही पा लिए हैं । वही उनके जीवन में प्रज्ञान में विकसित हुआ है ।

बुद्ध को हम जानते हैं । वे प्रज्ञान प्राप्त करने और दुःखों का सुझाव पाने निकल गए । पत्नी, बच्चे, सम्पत्ति सुख, राजकाज सबको तुच्छ

समझकर त्यागकर निकलते थे। सन्यासी जीवन को अपनाया। जंगल पर्वतों में घूमकर घोर तपस्या को अपनाया है।

कई गुरुजनों से उपदेश पाये हैं। शरीर और मन को दुःख पहुँचानेवाले कठिन अभ्यासों को अपनाया है।

उन्होंने जिन अभ्यासों को अपनाया उनसे बहुत अनोखी अनुभवों को प्राप्त कर लिया।

योग और ध्यान में कई तरह के अभ्यास के तरीके और अनुभव होते हैं। अभ्यास और अनुभव अभिन्न हैं। अभ्यास के अनुसार अनुभव प्राप्त होते ही हैं। बुद्ध भी कई प्रकार के अभ्यासों को अपनाया है। उसका अनुभव प्राप्त हुआ। पर उनको मालूम है कि ये सब वे नहीं हैं कि उन्होंने जिसकी खोज की। दुःखों का सुझाव पाना रूपी जवाब उनके प्रयासों से नहीं दिया गया है।

आगे क्या करेंगे ऐसे सूझ-बूझ के बिना वे एक पेड़ के नीचे बैठ जाते हैं।

जिसकी खोज में वे आये, वह उनको अपने आप मिल गया। किसी तरह के प्रयास के बिना उनकी खोज का प्रज्ञान उनको प्राप्त हुआ।

ऐसी ही स्थिति जे, कृष्णमूर्ति के जीवन में भी हुई। जे. के. और उनके भाई नित्या आदि के बारे में सुने हुए होंगे। ये दोनों भविष्य में संसार को बोध करानेवाले धार्मिक नेता बन जाएँगे – ऐसे तियासाफिकल सोसाइटी से खोज निकालते हैं।

उनको विशेष आध्यात्मिक अभ्यास दिये जाते हैं।

जे. के. को इससे कुछ अपूर्व शक्ति मिल गई है। ऐसी शक्ति को पाकर भी उन्होंने न प्रकट किया कि उनकी ज्ञान की स्थिति प्राप्त हुई है। जे.के. और उनके भाई दोनों ही ज्ञान स्थिति की प्रतीक्षा में हैं। अचानक एक दिन नित्या बुखार में पड़ते हैं।

जे.के. अपने अपूर्व शक्ति की सहायता चाहते हैं। अपने भैया की रक्षा करने की कोशिश करते हैं।



पर एक दिन किसी की बिना प्रतीक्षा के नित्या अचानक मर जाते हैं ।  
ये दोनों मिलकर ही रहकर संसार को बोध कराते हुए संसार का  
मार्गदर्शन करेंगे – संसारवाले इसी प्रतीक्षा में हैं ।

पर ऐसे बतानेवालों में एक-अकाल में मर गया । जे.के. को कुछ भी  
नहीं सूझता । उनसे दुःख न सहा जाता है ।

जे.के. और उनके भाई-8 आयु-से ही माँ-बाप से अलग हो चुके हैं ।  
वे दोनों माँ-बाप और अपने भाई बहनों से अलग होकर 8 आयु से युवावस्था  
तक एक साथ रहते थे । दोनों एक दूसरे के सहायक बनकर रहते थे ।

कभी भी ये दोनों पूर्ण ज्ञान से निकलेंगे इस प्रतीक्षा की स्थिति में  
नित्या मर गया ।

जे.के. मनोवेदना में तडपते हैं । किसके यहाँ जाकर वे तसल्ली पा  
सकते हैं ?

उनकी अपूर्व शक्ति भी उनके साथ छोड़ दी ।

नित्या के मरण को स्वीकार करने के बजाय उनको और कोई रास्ता  
नहीं सूझा । उस दुःख को स्वीकार करने के बजाय कोई रास्ता नहीं  
मालुम हुआ ।

उस दुःख को ऐसे ही स्वीकार करके उसके साथ रहते समय –उनमें  
यह परिवर्तन आया ।

किसके लिए वे इतने काल प्रतीक्षा करते थे, –वह ज्ञान विकास उनमें  
आ गया ।

उनकी अपूर्व शक्ति उनके साथ छोड़ने की स्थिति में,अपने सारे दुःखों  
को

– मन ही मन स्वीकार करने की स्थिति में,

– उनमें वह ज्ञान –विकास हो गया ।

भगवान रमण महर्षि के बारे में जानते हैं उनके जीवन में भी ऐसा ही  
हुआ । 14 से 16 आयु के बीच युवावस्था में उन्होंने ज्ञान प्राप्ति की ।

उस आयु में उन्होंने किसी प्रकार की आध्यात्मिक अभ्यास को न  
अपनाया ।

एक निर्धारित दिन वे मदुरै में थे । अचानक उनको मरणभय हुआ ।  
ऐसे डरते हैं कि मरण ही आ गया है ।

आमतौर पर बचपन में ऐसे भय होने पर क्या करते हैं ? ईश्वर पर  
विश्वास रखनेवाले ईश्वर से प्रार्थना करके रक्षा कर देने की विनती करते  
हैं या बड़ों के शरण में आते हैं । माँ-बाप बड़ों या दोस्तों के यहाँ जाकर  
तसल्ली पा लेते हैं । मरणभय से निवृत्ति पाने-ऐसे ही कार्य करते हैं ।

पर वे ऐसे न करके मरणभय को वैसे ही स्वीकार करने लगते थे ।  
मरण क्या है ऐसे ही स्वीकार करके मरण को ऐसे अभिनय करके देखते  
थे । इससे उनकी जो मन की समस्या थी उसे प्रत्यक्ष सामना करने की  
स्थिति हुई ।

उस स्थिति में ही उनकी एक मुक्ति गति मिल गई । सारे दुःखों से,  
व्यथाओं से छुटकारा पाने की एक मुक्ति की स्थिति मिल गई ।

भगवान रमण भी अन्त तक इसे ही कह रहे थे । उन्होंने जो अनुभव  
मदुरै में प्राप्त किया वही उनका सच्चा ज्ञानानुभव है कि ऐसे ही वे कहा करते  
थे । उसके बाद जो मिला वे सब अन्य प्रकार के हैं ।

सब से निवृत्ति की स्थिति में किंकर्तव्यमूढ में शान्त रूप में बैठते समय  
उनको समाधि में लगने का अनुभव होने लगा ।

उनको समाधिस्य होने का अनुभव ही उनके विज्ञापन बन गया ।

भगवान रमण जब सच्चाई का दर्शन करते तब एक युवा थे । एक  
बालक थे । अपने लिए वह स्थिति कैसे प्राप्त हुई-यह भी नहीं बता सकते  
थे ।

वे जब अन्य व्यक्तियों को उपदेश देते थे कहा करते, "तुम अपने आप  
पूछ लो "मैं कौन हूँ" ?

पर ऐसे पूछने पर उनको भी स्पष्टता न आई । ऐसे वे उस दिन पूछा  
करते तो उनको भी वह ज्ञान न प्राप्त हुआ होगा ।

पर उन्होंने ऐसे किसी लक्ष्य के बिना मरणभय को प्रत्यक्ष देखा है ।

बुद्ध भी ऐसे ही सभी अभ्यासों से कोशिश करके कुछ भी न कर सकने

की स्थिति में अपनी समस्या को – दुःख को प्रत्यक्ष देखा है ।

जे.के. को भी अपने अभ्यास और प्रयास से ज्ञान की प्राप्ति न हुई । किसी भी समस्या हो उसके हल करने हमारी तरफ़ से किसी भी कोशिश न किए बिना उसे ऐसे ही सामना करते समय—हम कुछ भी न करके सभी समस्याएँ अपने आप हल हो जाती हैं ।

बचाने सोचना या बदलने—सोचना इस समस्या को और भी मजबूत बना देती है ।

उस समय सुख की ओर लगन और विपक्ष में कार्यान्वित होना – ये हमारी समस्याओं को और मजबूत करा देते हैं ।

जब हम ऐसी स्थिति में आते हैं कि आगे करने के लिए कुछ भी नहीं है तब समस्याएँ हल हो जाती हैं ?

क्यों ऐसे हल हो जाते हैं ?

जब हम समस्याओं के प्रति कुछ भी नहीं करने की स्थिति में हैं, तब समस्याएँ वैसी ही होनी चाहिए ? वे क्यों ऐसे समाधान हो जाती हैं ।

संगीत की पेटी को देखा होगा । उदाहरण के लिए हार्मोनियम पेटी को लेंगे । उसमें ध्वनि पैदा करनेवाली रीड्स होती हैं । हर एक रीड्स को दबाते ही एक एक प्रकार की ध्वनि उत्पन्न होती है ।

एक रीड्स को एक बार दबाते हैं । एक प्रकार की ध्वनि प्रकट होती है । प्रकट होने वाला संगीत कितनी देर तक होगा ?

एक रीड्स को हम एक बार दबाते हैं तो उससे होने वाली ध्वनि की आयु सिर्फ़ आधा ही क्षण होगी । वह ध्वनि और भी चाहिए तो फिर से दबाने से ही होगा ।

एक बार दबाने से हुई ध्वनि आधा ही क्षण रहकर अपने आप गायब हो जाती है ।

उसे निकालने के लिए हमें प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है । वह आएगा, फिर अपने आप वह गायब होगा ।

हमारे मन के अनुभव भी ऐसे ही हैं । मनोभाव की सभी समस्याएँ, सभी अनुभव,

हम किसी एक रीड्स को दबाने से हुए हैं । उनके आयु भी आधा क्षण ही है ।

पर हम उस ध्वनि के गायब हो जाने के लिए फिर से अनजाने ही उस रीड्स को दबा देते हैं । श्रुति को कम करने रीड्स को दबा देते हैं । इसलिए गीत या श्रुति फिर से नयी बन जाती है । हम फिर से रीड्स दबा देते हैं तो, पहले जो ध्वनि आई वह अपने आप चली होगी ।

मन की समस्याओं को हल करने या दबाने सोचा तो वह फिर से आ जाती है । हमें करने के लिए कुछ भी नहीं है । ऐसे हमें जान लेना है । उसे खोज करना ही ठीक खोज होगी । सच्ची खोज है ।

ज्ञानी लोग ऐसे ही खोज कर लिए हैं । किसी प्रकार परिश्रम करके, अन्त में किसी भी प्रयत्न से फायदा न होने से –

- एक प्रकार की किंकर्तव्य विमूढ में
- इसकी जाँच कर लेते हैं ।

ऐसे ही सभी ज्ञानी संग्राम करते हुए असफलता पाने के जैसे,

– आप भी सभी तरीको में परिश्रम से संग्राम करके असफलता पाने की स्थिति में,

- इसे खोज करने की कोई आवश्यकता नहीं है ।

हमारी मनोभावना ऐसे ही कार्यान्वित होती है कि प्रत्यक्ष हमें जाँच कर लेना काफ़ी है ।

- ज्ञानीगण प्राप्त किए ज्ञान हम भी प्राप्त कर लेंगे ।

उस स्थिति में हम देख सकते हैं कि हमारी सारी समस्याएँ अपने आप हल हो जाती हैं ।

हम यह जान लेते हैं कि हमारे मन की समस्याओं के सामना करने हमें करने के लिए कुछ भी नहीं है । इस स्थिति में हमारे कुछ भी न किए बिना हमारी समस्याएँ अपने आप हल हो जाती हैं ।

यह समाधान क्या तात्कालिक है ? पुनः पुनः फिर से हमें खोज़ करते ही रहना है ? क्या यह निरन्तर नहीं है ? यह हल कितने काल तक उपयोगी होगा ?

इस संदर्भ में हमें मन के कार्यान्वित होने के बारे में भी कुछ जान लेना है ।

हमारे पास तो एक ही मन है । पर उसे अच्छी तरह जान लेने के लिए उसे अन्तः मन व बाहरी मन ऐसे दो भागों में बाँट लें ।

हमारे अन्तः मन को सब्कान्शियस माईडं या आन्तरिक मन के नाम से कह सकते हैं । वही हमारा स्वभाव है । वह एक संगीत वाद्य के जैसा है । एक हारमोनियम पेटी को लेंगे तो कई प्रकार के स्वर पैदा करनेवाले रीड्स होंगे । हमारे मन में कुछ अंश न होना है—ऐसे कहना म्यूसिकल इन्स्ट्रूमेन्ट में कुछ रीड्स लेकर फेंकने के जैसे है । ऐसे एक—एक रीड्स को लेते हैं तो म्यूसिकल इन्स्ट्रूमेन्ट ही न होगा । हमारे स्वभाव में सब अंश पंजी होंगे । एक परिस्थिति में हमारा आन्तरिक मन उसके साथ कार्यान्वित होने से संगीत प्रकट होने के जैसे का एक अनुभव पैदा होता है । प्रकट हुए अनुभव ही बाहरी मन है ।

बाहर आने का अनुभव आधा क्षण ही होगा । वह अपने आप चला जाएगा । उसे अपनी ढंग से आकर जाने देंगे तो एक खुला प्रवाह के जैसे हो जाएगा । अनुभव अपने आप कार्यान्वित हो जाने की स्थिति हो जाएगी । हमें अपने अनुभवों को न सामना करने की स्थिति हो जाएगी । उस स्थिति में हम कार्यान्वित हो जाते हैं तो हमारा अनुभव दूसरे परिमाण में हो जाते हैं ।

हमने देखा है कि हमारा आन्तरिक मन हमारा स्वभाव है । हमारे अनुभवों से ही वह बन जाता है । अनुभवों का भण्डार होता है । हमारा स्वभाव भी तब नये रूप में परिणत होता है जब हम नये नये अनुभवों को प्राप्त करते ही रहते हैं ।

इसके द्वारा हमारी संगीत पद्धति को ही श्रेष्ठ समृद्धी बना देते हैं । यह वृद्धि अपने आप होती है । कालक्रम में बनता है । यह हमारे यत्न से न बना है ।

इससे आपके मनोभाव ही बदल जाता है ।

एक मोटर गाडी को तेजी से चलाते जाते हैं । पर आपको आगे चलने का रास्ता न होकर खतम होता है । आप उसी वेग से ब्रेक डालते हैं तो गाडी को क्या होगा ? आपकी गाडी अपने आप मोड़ लेती है । स्टियरिंग के चलाये बिना गाडी खुद मोड़ लेती है ।

उसी प्रकार जब हम समझ लेते हैं कि करने के लिए कुछ भी नहीं है तब मन का चलन में और किसी एक रूप में परिवर्तन हो जाता है ।

यह समझ पाने तक हमारा मन इसी संग्राम में होगा कि हर एक अनुभव को कैसे बदल देंगे । यह समझ प्राप्त करने के बाद जो मन होनी बात को अनहोनी बनाने संग्राम करनेवाला है, वैसे न करने का मन बनता है । जो कुछ होता है उसे स्वीकार करनेवाले स्वभाव आ जाता है ।

ऐसे स्वीकार करने की स्थिति में वह मन की समस्या क्या अब भी होती है ? नहीं वह भी वैसे ही न होकर गायब हो जाती है ।

ऐसी स्थिति में सब अपने आप कार्यान्वित होकर प्रवाह बनकर अपने आप सुधारने की स्थिति बन जाती है ।

योगा माने हमारे मन की समृद्धि करना है । जब तक टयूनिंग है तब तक हमारा मन अच्छी स्थिति में है । उसके अन्त होने पर जहाँ से रवाना हुआ उसी स्थान पर फिर आ जाते हैं ।

हमारी समस्याएँ हमारे लिए प्रतीक्षा करेंगी । समृद्धि से छूटते ही हमारी समस्याएँ हमें पहुँचेंगी । योग हमारे लिए अच्छे नींव बना देता है । पर उसे भी पार कर, करने के लिए कुछ भी नहीं है ऐसी स्थिति में हमें आना है । मन की समस्याओं के प्रति हमें करने के लिए कुछ भी नहीं हैं । ऐसे समझ लेने पर जो समस्याएँ आतीं वे अपने आप गायब होती हैं ।

करने को कुछ भी नहीं है इसलिए हमें ऐसे मत समझना है कि बाहरी रूप में कुछ भी किए बिना चुपचाप रहेंगे ।

बुद्ध एक देश को आते हैं । राजसभा के लोग पूछते हैं, “ आप शिष्यों की भलाई के लिए कई उपदेश देते हैं । हम परिवार के साथ रहते हैं, हमारे लिए उपयोगी उपदेश दीजिए ” ।

बुद्ध कहते हैं, " " हमारा मन है, शरीर भी है । दोनों से क्रियान्वित होना है । मन जितनी अचेत होता है उतनी तन्दुरुस्त होता है । शरीर जितने प्रयास से काम करता है उतना तन्दुरुस्त बनता है ' ' ।

उसी प्रकार हमारे मन के कुछ अंशों को भी ठीक कराना है । पर मन के स्वाभाविक बुरे अंश को अगर हम बदलने का प्रयत्न करें तो वह और भी बुरा बन जाता है । मन का स्वभाव तभी ठीक होते हैं जब सोचते हैं कि मन से करने को कुछ भी नहीं हैं इससे हम चुप रहेंगे । उसी प्रकार देश में व घर में सुधारने योग्य अंशों को हमें योजना बनाकर प्रयास करके सुधारना चाहिए । अगर हम कुछ भी नहीं करते हैं तो घर की चारों ओर नाले ही बहेंगे । घर भर मच्छर ही मच्छर होंगे । रास्ता ही नहीं होगा । बाहरी कार्यों को हमारे प्रयत्न व परिश्रम से ही सुधार सकते हैं ।

समस्याएँ तभी ज्यादा होती हैं जब बाहरी रूप में हम कुछ भी नहीं करते हैं । आन्तरिक समस्याएँ तभी ठीक हो जाती हैं जब हम आन्तरिक स्तर पर कुछ भी नहीं करते हैं ।

किसी चीज़ को प्राप्त करना है तो अभ्यास और प्रयत्न की आवश्यकता होती है ।

पर प्राप्त करने को कुछ भी नहीं है – ऐसी स्थिति में समझ लेना ही काफी है । उसे क्रियान्वित करने की आवश्यकता नहीं है । वह अपने आप बननेवाली आटोमेटिक प्रासस हो जाता है ।

करने को कुछ भी नहीं है । सिर्फ इसे जान लेना ही हमारा काम है । उन दिनों के शास्त्र हमें मार्ग दर्शन करते हैं । कई उपदेश देते हैं जवाब देते हैं । पर वे उसे न बाँटे हैं ।

कालकुलेटर की उपयोगिता से एक गणित करते हैं तो जवाब मिलेगा । जवाब ठीक ही होगा । पर जवाब कैसे मिला – यह नहीं समझ सकते हैं तो आपकी योजनाओं के लिए उसका प्रयोग नहीं कर पाते हैं ।

पर आप यह गणना उसकी रीति से हल करने समझ लेंगे तो वह आपके मन की गति से मेल करेगा ।

मन ही मन हमें करने के लिए कुछ भी नहीं है — इस बात को कारण कार्य से बाँटकर समझ लेंगे तो, सभी अपने आप कार्यान्वित होकर अपने आप गायब हो जाएँगे — इस सत्य को समझ लेते हैं ।

हर एक क्षण में हमें एक एक अनुभव होता है । हर एक परिस्थिति में अनुभव होते हैं । मन से संबन्धित अनुभव होते ही रहते हैं । उन अनुभवों के प्रति कुछ भी किए बिना बाहरी कार्यों में लग जाते हैं तो वही काफी है । अन्तःकरण की ओर से हमें करने कुछ भी नहीं है ऐसी स्थिति में वह अपने आप सुधार लेता है । मन की ओर से हमें करने कुछ भी नहीं है ।

गणित को ठीक तरह से समझ लेने के जैसे समझ लेना ही काफी है । अनुकरण करने की आवश्यकता नहीं है ।

ऐसे मान लीजिए कि हम एक स्वप्न देखते हैं । हमें प्यार से रहना चाहिए । किसी से क्रोधित न होना—ऐसे विचार में रहते हैं ।

पर स्वप्न में हम किसी को क्रोध में मारते हैं । यह स्वप्न ही है । इस स्वप्न के लिए आप क्या करनेवाले हैं ? स्वप्न के संबन्ध में हमें करने कुछ भी नहीं है ।

स्वप्न के जैसे हमारे मन में भी मन का अनुभव बनते आ रहे हैं । दोनों में भिन्नता नहीं है । स्वप्न खतम हो चुका है । अनुभव भी खतम हुआ है । वह खतम होकर वैसे ही चलता रहता है ।

जो गलती स्वप्न में हुई आप स्वप्न में मार खाए मनुष्य से जागृत अवस्था में जाकर माफ़ी नहीं माँगते हैं । उस अनुभव की जिम्मेदारी लेने की आवश्यकता नहीं है । अपने आप आकर खुद चला जाता है । हम जिम्मेदारी न लेने के कारण वह अपने आप गायब हो जाता है । इस तरह अपने आप हल होने के कारण यह साबित होता है कि अपनी ओर से प्रयास करके कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है ।

आप इसे समझ लेते हैं तो आपने जिसको समझ लिया वह ऐसा हो जाएगा कि जैसे कठिन प्रयास करके ज्ञानियों ने समझ लिया । इसे आपको



कठिन परिश्रम करके जाँच लेने की आवश्यकता नहीं है । यहाँ हम से समझ लेने की बात वही है – इसे आप अपने आप जाँच करके देखना काफ़ी है । उन बहुत बड़े ज्ञानियों ने जिसको समझ लिया है उसे आप भी समझ लिए होंगे ।

इसके लिए अभ्यास की या प्रयत्न की आवश्यकता नहीं है । ध्यान और योग दोनों के लिए अभ्यास और कोशिश की आवश्यकता है । यहाँ समझना ही काफ़ी है । समझ लेना ही काफ़ी है । बिना किसी प्रकार के अभ्यास या प्रयत्न के सब अपने आप हो जाते हैं ।

आप अपने आप ज्वलंत-दीप बन जाएँगे ।

मेरे ख्याल में मैं, आपका दोस्त ही हूँ ।

ऐसे रख लीजिए कि हम छात्र बनकर अध्यापक से पाठ सीख रहे हैं । अध्यापक गणित पाठ चलाते हैं । हमें आधा समझी, ना समझी रहते हैं ।

हम क्या करते हैं ? – अध्यापक के चले जाने पर सहपाठियों से पूछते हैं । जिस छात्र ने समझ लिया है वह उसे अपने मार्ग में बताकर हमें समझा देता है ।

ऐसे सहपाठियों की योग्यता से ही मैं अपने स्पष्ट विषयों को आपसे बाँट देता हूँ । कई प्रकार के राय, उपदेश, अभ्यास आदि में मतभेद होने से जो जानकारी हुई उसे आप से बाँट लेता हूँ ।

जिसको हमें विशेष रूप से समझ लेना है उसे समझने पर आगे चलकर समझने के लिए कुछ भी नहीं है ।

ध्यान-अभ्यासों में हमें अच्छे प्रकार के अनुभव मिलते हैं । पर निर्धारित काल के बाद गायब हो जाएगा । पर सिर्फ जानकारी प्राप्त करना – यही हमें समझ लेना है कि यही जानकारी हमें प्राप्त करना है । यह समझते हैं तो यही जानकारी है ।

फिर वह समझ आपसे नहीं चला जाएगा । समझ लेने के बाद कोई भी काम नहीं है । जानकारी के साथ सभी काम खतम हो जाते हैं । यह

जानकारी अपने आप क्रियान्वित होनेवाला अंश का काम करता है । उस स्थिति में आप अपने लिए ज्वलंत दीप बन जाते हैं । फिर आपको किसी का मार्गदर्शन की आवश्यकता नहीं होती है ।

उसके बाद किस घटना से कौन से अनुभव प्राप्त हुए हैं ठीक है वह घटित स्वप्न के जैसे चाहे वह सुख भी हो या दुःख भी हो मुख्यत्व खो देते हैं । आपको उसकी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं होती है । समाधान करने की जरूरत भी नहीं है । स्वप्न को हम कैसे हल कर सकते हैं ?

हमारी समस्याओं से छुटकारा पाना घटित स्वप्न से छुटकारा पाने के जैसे ही है । सिर्फ यही समझना काफी है कि वह स्वप्न है । वह अपनी गति में चलता रहेगा ।

हमारे दिन ब दिन के जीवन के लिए हमें बुद्धि की उपयोगिता करना है ।

अगर हम मन की चिन्ता को दूर करने प्रयत्न करें तो वह हमारे मनोभाव को और जटिल करा देती है । हमें उसके संबन्ध में करने कुछ भी नहीं है – ऐसे जान लेते समय सब ठीक होकर सुधार लिए हैं । वहाँ हमें करने के लिए कुछ भी नहीं है । इसे अपने में समझ लेने की स्थिति में आप खुद ज्वलंत दीपक बन जाते हैं ।

ऐसी स्थिति में बाकी लोगों को प्रकाशित करानेवाली शक्ति भी आपको मिल जाती है । आपको ऐसे ही स्वीकार करके आपके विपरीत संग्राम न करेंगे तो आप सब अभी ज्ञानी ही हैं ।

इसे समझ लेना काफी है कि आपको संग्राम करने की जरूरत नहीं है । हम जिस अवस्था में हैं वह ज्ञान की अवस्था है । ज्ञानावस्था याने एक पेक्यूलियर स्थिति—विनोदमय अतीत की स्थिति है – ऐसे सोचने तक हम किसी एक चीज़ की खोज करते ही रहेंगे ।

हम जिस स्थिति में हैं वही ज्ञान—स्थिति – ऐसे हमें अपने आप निश्चय करना काफी है ।

क्या बुद्ध और हममें तुलना कर सकते हैं ? क्या भगवान रमण और हममें तुलना कर सकते हैं ? – ऐसे अपने आप अपने को तुच्छ समझना नहीं चाहिए ।

वे किसी एक तरह से प्रसिद्ध होने के कारण ही महान माने जाते हैं । नींव में वे भी आप के जैसे अपने आप को पूर्ण रूप में स्वीकार कर लिए हैं । वे अपने आप को या खुद का सामना करने का संग्राम नहीं करते हैं ।

आपको बदलने के लिए किसी की खोज में दौड़ने की आवश्यकता नहीं – ऐसे आप दृढ़ रहेंगे तो वही काफी है । सभी परिवर्तन अपने आप हो जाएगा । आपके कार्य अपने आप एक नदी के जैसे बहकर खुद को शुद्ध कर देगा ।

आप एक पुनीत प्रवाह बन जाएँगे ।

आपका कार्यक्रम ही एक अनोखा –पुनीत कार्यक्रम बन जाता है ।

-----

श्री भगवत जी से सीधा संपर्क करके अपने संदेह दूर करने संपर्क रखने का पता :-

श्री भगवत

108/21, चेंगम रोड,

टी.एस.आर.नगर,

योगीराम सूरत कुमार आश्रम के पीछे

तिरुवण्णामलै – 606 603.

ॐॐॐॐॐॐ